संपादक का नोट

प्रभु की स्तुति हो। मसीह में मेरे सभी भाइयों और बहनों को नमस्कार। जैसा कि हम एक नए महीने में कदम रखते हैं, आइए हम पिछले महीने में प्राप्त सभी आशीर्वादों के लिए आभारी रहें, और प्रार्थना करें कि प्रभु की अधिक कृपा हमें इस महीने भी आगे मार्गदर्शन करती रहे।

उत्पत्ति 17: 4–5 ''4 देख, मेरी वाचा तेरे साथ बन्धी रहेगी, इसलिये तू जातियों के समूह का मूलपिता हो जाएगा। 5 इसलिये अब से तेरा नाम अब्राम न रहेगा, परन्तु तेरा नाम अब्राहम होगा; क्योंकि मैं ने तुझे जातियों के समूह का मूलपिता ठहरा दिया है।''

परमेश्वर ने पहले अब्राहम को एक दर्शन दिया, और उसे एक वचन भी दिया। सारा ने उस दर्शन में विश्वास किया था, और वादे में भी, जब तक वह पूरा न हुआ। हाजिरा उस दर्शन का हिस्सा नहीं थी और इसलिए प्रभु ने उसे मध्य मार्ग से अलग कर दिया। यह अंत में केवल अब्राहम और सारा ही थे जो प्रभु के साथ दृ ढ़ता से रहे, विश्वास में, अंत तक, प्रभु के दर्शन को अपने जीवन में पूरा होते देखने के लिए। इब्रानियों 11:12''इस कारण एक ही जन से, जो मरा हुआ सा था, आकाश के तारों और समुद्र के तीर के बालू के समान अनगिनित वंश उत्पन्न हुए।''

प्रभु से एक दर्शन को देखने और इसे पूरा होने के बीच का चरण बहुत महत्वपूर्ण है। यही वह समय है जब हमें बहुत धैर्य और प्रार्थना के साथ प्रभु की प्रतीक्षा करनी होती है। सारा को पता चल गया था कि उसका गर्भ मर चुका है और अब्राहम अपने पुरे बुढ़ापे की अवस्था में था, लेकिन वे प्रभु के साथ जुड़ गए और विश्वास में खड़े थे जो वादा और दर्शन प्रभु ने उन्हें दिया था। रोमियों 4: 19–21 ''19 वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ, 20 और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की; 21 और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी समर्थ है।''

प्रभु के वादे और दर्शन सच हैं और हमेशा के लिए हैं, और वे कभी जमीन पर नहीं गिरेंगे। यह हमारा कर्तव्य है कि जब तक ये दर्शन पुरे नहीं हो जाते, तब तक प्रार्थना में प्रभु से जुड़े रहें। इसी तरह, यूसुफ की कहानी में, हम देखते हैं कि उसे अपने जीवन में पूर्ण होने के लिए 13 साल इंतजार करना पड़ा। इसी तरह, यदि प्रभु ने हमें दर्शन दिया है, तो हमें भी धैर्यपूर्वक प्रभु की प्रतीक्षा करनी चाहिए। प्रभु द्वारा हमें दिए गए दर्शन

और वचन को पूरा करने के लिए दिन, महीने, वर्ष, दशक हो सकते हैं, लेकिन इस दौरान हमें केवल प्रभु के साथ प्रार्थना में जुड़े रहना चाहिए और हमेशा विश्वास में दृढ़ रहना चाहिए।

यशायाह 51: 1 ''हे धर्म पर चलनेवालो, हे यहोवा को ढूँढ़नेवालो, कान लगाकर मेरी सुनो; जिस चट्टान में से तुम खोदे गए और जिस खदान में से तुम निकाले गए, उस पर ध्यान करो।''

हमारे प्रभु ने हर एक को विभिन्न रूपों में एक गड्ढे से उठाया है। हमें उस गड्ढे को कभी नहीं भूलना चाहिए जहाँ से हमें बाहर निकाला गया है।

जब हम परमेश्वर के साथ जुड़ जाते हैं, तो हम साहसपूर्वक कह सकते हैं, जैसा कि भजन संहिता 138: 7 में दिया गया है ''चाहे मैं संकट के बीच में रहूँ तौभी तू मुझे जिलाएगा, तू मेरे क्रोधित शत्रुओं के विरुद्ध हाथ बढ़ाएगा, और अपने दाहिने हाथ से मेरा उद्धार करेगा।''

प्रभु हमेशा हमारे लिए दुश्मन के साथ लड़ेंगे, और अपने दाहिने हाथ से, वह हमें आशीर्वाद देंगे और हमें उद्धार के साथ अपनी कृपा देंगे, जब तक हम खुद को प्रभु के साथ एकजुट रहते हैं और प्रभु को हमारी धार्मिकता से खुश करना चाहिए। बुरी परिस्थितियों में भी, प्रभु हमारी देखभाल करेंगे। हम सभी के लिए जो हमारे पापों में मृत थे, प्रभु ने उनकी कृपा और दया से जीवन दिया है। रोमियों 8: 11 ''यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा।''

आज हमें अपने पापों से छुटकारा मिला है केवल प्रभु की क्षमा द्वारा। उद्धार हमारे लिए प्रभु की ओर से एक उपहार है, और इसलिए हम उसके साथ बेटे और बेटी के रूप में एक पिता के साथ, या एक दोस्त के रूप में एक दोस्त के साथ में प्रभु के साथ पवित्र भोजन कर सकते हैं। जब हम पाप में मर जाते हैं, तब भी परमेश्वर हमें उद्धार दे सकते है, इसलिए हमें अपना जीवन प्रभु के हाथों में देना चाहिए। जब परमेश्वर हमें उद्धार देते है, तो कोई भी इसे हमसे दूर नहीं कर सकता है।

हम फिर से मिलें तब तक,

पास्टर सरोजा म।

परमेश्वर की आज्ञा मानने में परिश्रमी बनो।

योना 3:10 ''जब परमेश्वर ने उनके कामों को देखा, कि वे कुमार्ग से फिर रहे हैं, तब परमेश्वर ने अपनी इच्छा बदल दी, और उनकी जो हानि करने की ठानी थी, उसको न किया।'' योना एक नबी था, प्रभु ने उसे नीनवे जाने का आदेश दिया ताकि वह उस देश में जाए और उन लोगों को उपदेश और चेतावनी दे सके जो विनाश होने वाला है। 40 दिनों के भीतर अगर वे अपने पापों और अधर्म से पश्चाताप नहीं करते हैं, तो वह उन्हें उनके लिए नियोजित दंडित करेंगे। उस समय, नीनवे के लोगों ने योना के उपदेश को सुना, उन्होंने उपवास किया, प्रार्थना की और पश्चाताप किया। आइए हम पढ़ें योना 3: 4–6 ''4 योना ने नगर में प्रवेश करके एक दिन की यात्रा पूरी की, और यह प्रचार करता गया, "अब से चालीस दिन के बीतने पर नीनवे उलट दिया जाएगा।'' 5 तब नीनवे के मनुष्यों ने परमेश्वर के वचन की प्रतीति की; और उपवास का प्रचार किया गया और बड़े से लेकर छोटे तक सभों ने टाट ओढ़ा। 6 तब यह समाचार नीनवे के राजा के कान में पहुँचा; और उसने सिंहासन पर से उठ, अपने राजकीय वस्त्र उतारकर टाट ओढ़ लिया, और राख पर बैठ गया।'' हम में से कई लोगों के दिलों में सवाल है कि ''प्रभु मेरी प्रार्थना क्यों नहीं सुन रहे हैं? प्रभु मेरी प्रार्थना का जवाब क्यों नहीं दे रहे है?'' हमारे लिए हमारे प्रभु का जवाब है, वह यह है कि, हम उनके लिए पर्याप्त रूप से विनम्र नहीं हैं जितना आवश्यक है। यहाँ हम देखते हैं कि नबी योना ने उपदेश दिया था कि प्रभु क्या चाहते हैं कि वह उपदेश दे, तुरंत ही नीनवा के लोग, बड़े या छोटे, अमीर या गरीब ने अपने पापों को स्वीकार कर लिया और उपवास किया और प्रभु परमेश्वर के सामने प्रार्थना की। राजा ने अपने सिंहासन को छोड़ दिया, अपने कपड़े बदल दिए और टाट का कपड़ा पहन लिया और राख के बीच बैठ गया। उन सभी ने अपने आप को दीन बनाया था, इस प्रकार प्रभु ने इन लोगों पर से अपने क्रोध को हटा लिया। हमारे जीवन में भी, जब हमें अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर नहीं मिलते हैं, तो हमें पता होना चाहिए कि हम अभी भी अपने आप को प्रभु के सामने उतना विनम्र नहीं कर पाए हैं जितना वह हमसे चाहते हैं। आइए हम पढ़ते हैं योना 4: 11 ''फिर यह बड़ा नगर नीनवे, जिसमें एक लाख बीस हजार से अधिक मनुष्य हैं जो अपने दाहिने बाएँ हाथों का भेद नहीं पहिचानते, और बहुत से घरेलू पशु भी उसमें रहते हैं, तो क्या मैं उस पर तरस न खाऊँ?''क्या राजा, क्या बुजुर्ग, बच्चों से लेकर सभी जानवरों तक भी, उपवास किया और खुद को दीन बनाया, इस प्रकार प्रभु ने नीनवे की प्रार्थनाओं को सुना और उनका उत्तर दिया। प्रभु ने नीनवे की भूमि को नष्ट करने से अपना मन बदल दिया था। हमारा अनुरोध चाहे बड़ा हो या छोटा, हमे अपने आप को उतना विनम्र करना चाहिए, जितना परमेश्वर हमें विनम्र करना चाहते हैं, वह निश्चित रूप से हमारी प्रार्थनाओं को सुनेंगे और उनका जवाब भी देंगे। आइए हम पढ़ें लैव्यव्यवस्था 23: 27–29 ''27 "उसी

सातवें महीने का दसवाँ दिन प्रायश्चित्त का दिन माना जाए; वह तुम्हारी पवित्र सभा का दिन होगा, और उसमें तुम अपने अपने जीव को दुःख देना और यहोवा के लिये हव्य चढ़ाना। 28 उस दिन तुम किसी प्रकार का काम–काज न करना; क्योंकि वह प्रायश्चित्त का दिन नियुक्त किया गया है जिसमें तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के सामने तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त किया जाएगा। 29 इसलिये जो प्राणी उस दिन दुःख न सहे वह अपने लोगों में से नष्ट किया जाएगा।'' इसलिए जब हम प्रभु के पवित्र मंदिर में आते हैं, तो हमें अपनी सारी विनम्रता के साथ आने की आवश्यकता है। जिस तरह नीनवे के लोगों के खिलाफ परमेश्वर ने अपने क्रोध को हटा लिया था, वह हमारी विनम्रता को भी देखेंगे और हमारे पापों को भी क्षमा करेंगे।

न्यायियों या राजाओं के समय के दौरान, जब भी इस्राएली गर्व करते थे और उन पर प्रभु की कृपा को भूल जाते थे और पाप करते थे, प्रभु का कोप उनपर आता था और वह उन्हें दुश्मनों के हाथों में दे दिया करते थे। जब तक इस्राएलियों ने एक बार फिर से प्रभु को पुकारा, तब तक अपने आप को प्रभु के सामने गिड़गिड़ाया, जितना कि आवश्यक था, केवल तभी प्रभु परमेश्वर ने उन्हें सुना और उनकी प्रार्थनाओं का जवाब दिया और उनके पापों को माफ कर दिया और उन्हें आशीर्वाद दिया। आज, अगर हमारे दिलों में कोई दर्द और दुःख है, अगर प्रभु ने हमारी प्रार्थना नहीं सुनी है, अगर प्रभु का अनुग्रह हमसे छीन लिया गया है, तो याद रखें कि प्रभु ने हमें उनके समीक्ष नम्र होने का एक और अवसर दिया है। शुरू के समय से, जब भी इस्त्राएलियों ने प्रभु परमेश्वर के खिलाफ गए और पाप किया, तब तक उन्हें दंडित किया गया जब तक कि वे प्रभु को पुकार कर खुद को दीन नहीं कर लेते, तभी प्रभु ने अपना कोप हटाया और उनके पापों को क्षमा कर दिया। राजा योशिय्याह 8 साल की छोटी उम्र में राजा बन गया। 31 साल तक उन्होंने शासन किया। उस समय एक नबी हुल्दा था, जिसे प्रभु परमेश्वर ने राजा योशिय्याह के बारे में बात की थी। आइए पढ़ते हैं 2 राजाओं 22:17 ''उन लोगों ने मुझे त्याग कर पराये देवताओं के लिये धूप जलाया और अपनी बनाई हुई सब वस्तुओं के द्वारा मुझे क्रोध दिलाया है, इस कारण मेरी जलजलाहट इस स्थान पर भड़केगी और फिर शांत न होगी।'' जब राजा ने नबी की भविष्यवाणी सुनी। उसने प्रभु का भय माना और पूरी तरह से टूट गया। 2 राजाओं 22: 19–20 ''19 इसलिये कि तू वे बातें सुनकर दीन हुआ, और मेरी वे बातें सुनकर कि इस स्थान और इसके निवासियों को देखकर लोग चकित होंगे, और शाप दिया करेंगे, तू ने यहोवा के सामने अपना सिर झुकाया, और अपने वस्त्र फाड़कर मेरे सामने रोया है, इस कारण मैं ने तेरी सुनी है, यहोवा की यही वाणी है। 20 इसलिये देख, मैं ऐसा करूँगा कि तू अपने पुरखाओं के संग मिल जाएगा, और तू शान्ति से अपनी कबर को पहुँचाया जाएगा, और जो विपत्ति मैं इस स्थान पर डालूँगा, उसमें से तुझे अपनी आँखों से कुछ भी देखना न पड़ेगा।' '' तब उन्होंने लौटकर राजा को यह सन्देश दिया।'' राजा ने अपने पापों को स्वीकार किया, प्रभु परमेश्वर के सामने रोया और खुद को विनम्र किया। प्रभु परमेश्वर ने राजा को उसके पापों से मुक्ति दिलाई और उसे आशीर्वाद दिया। हमने देखा है कि जो कोई भी प्रभु परमेश्वर के सामने विनम्रता और पश्चाताप के साथ गया था, प्रभु ने उन्हें सुना और उनकी प्रार्थनाओं का जवाब दिया। कई बार, प्रभु हमारे जीवन में दुःख और दर्द की अनुमति देते है, ताकि हम खुद को विनम्र करें, उनके सामने रोएं और इस प्रकार वह हमारी प्रार्थना सुनें। प्रभु इस दुनिया में स्वर्ग से नहीं आएंगे, लेकिन जब हम अपने दिलों से रोते हैं, तो वह हमारे रोने की आवाज को सुनकर उसका जवाब देते है। इस प्रकार, प्रभु आज भी अपने सेवकों और नबियों के माध्यम से हमसे बातें करते हैं। जैसे नबी ने राजा से बात की, राजा का दिल डर से भर गया और वह पश्चाताप में प्रभु के सामने पिघल गया। एक प्रतापी और

पत्थर दिल राजा ने उसके कपड़े फाड़ दिये और रोया जब उसने उसके लिए भविष्यवाणी सुनी। वचन 20 में ''इसलिये देख, मैं ऐसा करूँगा कि तू अपने पुरखाओं के संग मिल जाएगा, और तू शान्ति से अपनी कबर को पहुँचाया जाएगा, और जो विपत्ति मैं इस स्थान पर डालूँगा, उसमें से तुझे अपनी आँखों से कुछ भी देखना न पड़ेगा।' " तब उन्होंने लौटकर राजा को यह सन्देश दिया।'' तुरंत ही प्रभु परमेश्वर ने वही नबी के माध्यम से एक बार फिर से बात की और राजा को एक वचन भेजा क्योंकि उसने पश्चाताप किया था, टूट गया था और एक विपरीत ह्रदय था, प्रभु ने उसकी प्रार्थना सुनी और उसे दंडित करने का विचार प्रभु ने बदल दिया जो की उसके लिए निक्षित था। हालाँकि जितना हम प्रभु के लिए कष्ट उठाते हैं, यह केवल हमारे लिए उतना ही लाभदायक होगा। हमने पवित्र शास्त्र में पढ़ा है कि राजाओं, याजकों और नबियों के जीवन में, जितना वे अपने आप को विनम्र करते थे उतना ही वे प्रभु द्वारा धन्य होते थे। हमें याद रखना चाहिए कि प्रभु अभिमान का विरोध करते हैं लेकिन विनम्र से प्यार करते हैं। जब हम पर प्रभु की कृपा होती है, तो हमें कभी भी गर्व नहीं करना चाहिए, बल्कि हमें खुद को और भी अधिक विनम्र होना चाहिए। आइए पढ़ते हैं, 1 राजाओं 21: 25–29 ''25 कसाने पर वह काम करने को जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, अपने को बेच डाला था। 26 वह तो उन एमोरियों के समान जिनको यहोवा ने इस्राएलियों के सामने से देश से निकाला था बहुत ही घिनौने काम करता था, अर्थात् मूरतों की उपासना करने लगा था। 27 एलिय्याह के ये वचन सुनकर अहाब ने अपने वस्त्र फाड़े, और अपनी देह पर टाट लपेटकर उपवास करने और टाट ही ओढ़े पड़ा रहने लगा, और दबे पाँवों चलने लगा। 28 तब यहोवा का यह वचन तिशबी एलिय्याह के पास पहुँचा, 29 "क्या तू ने देखा है कि अहाब मेरे सामने नम्र बन गया है? इस कारण कि वह मेरे सामने नम्र बन गया है मैं वह विपत्ति उसके जीते जी उस पर न डालूँगा परन्तु उसके पुत्र के दिनों में मैं उसके घराने पर वह विपत्ति भेजूँगा।'' शुरू से, चाहे वह न्यायियों, राजाओं या इस्राएलियों ने, जब वे पश्चाताप करते थे, जब वे प्रभु को पुकारते थे और स्वयं को उतना ही विनम्र करते थे, जितना कि प्रभु परमेश्वर उनसे चाहते थे, तभी प्रभु ने उनका रोना सुना और उन पर अपना क्रोध हटा दिया। आइए हम पढ़ें 2 इतिहास 12: 1–2 ''1 परन्तु जब रहूबियाम का राज्य दृढ़ हो गया, और वह आप स्थिर हो गया, तब उसने और उसके साथ सारे इस्राएल ने यहोवा की व्यवस्था को त्याग दिया। 2 उन्होंने जो यहोवा से विश्वासघात किया, इस कारण राजा रहूबियाम के पाँचवें वर्ष में मिस्र के राजा शीशक ने,'' जब राजा रहूबियाम उस पर प्रभु की कृपा भूल गया, तो वह दुश्मनों के रथों से घिरा हुआ था और वे उसके साथ युद्ध करने के लिए तैयार थे। जी हाँ, हमारे जीवन में भी, जब हम दुःख और दर्द में होते हैं और जब प्रभु परमेश्वर हमारी प्रार्थना नहीं सुनते हैं। यही वह समय है जब हमें अपने आप को नम्र करना चाहिए और पश्चाताप करना चाहिए और प्रभु को याद करना चाहिए। वह एक बार फिर हमें सुनेंगे और जवाब देंगे। जब हम प्रभु के सामने पश्चाताप करते हैं, तो वह निश्चित रूप से अपने क्रोध से हमें मुक्त करेंगे और हमारे पापों को क्षमा करेंगे और हमें आशीष देंगे। यहाँ हमने पढ़ा कि जब राजा और प्रजा ने खुद को नम्र किया और प्रभु को पुकारा, तो प्रभु ने उनके रोने की आवाज सुनी और उनकी विनम्रता को देखा और इस तरह उस दंड से मुक्त किया जिसे उन्होंने इस्राएलियों पर डालने योजना बनाई थी, हम पढ़ते हैं 2 इतिहास 12 : 7 ''जब यहोवा ने देखा कि वे दीन हुए हैं, तब यहोवा का यह वचन शमायाह के पास पहुँचा: "वे दीन हो गए हैं, मैं उनको नष्ट न करूँगा; मैं उनका कुछ बचाव करूँगा, और मेरी जलजलाहट शीशक के द्वारा यरूशलेम पर न भड़केगी।'' आइए हम पढ़ें 2 इतिहास 33 : 12 ''तब संकट में पड़कर वह अपने परमेश्वर यहोवा को मानने लगा, और

अपने पूर्वजों के परमेश्वर के सामने बहुत दीन हुआ, और उससे प्रार्थना की।'' प्रभु ने हमें आशीर्वाद देने के लिए बुलाया है, लेकिन जब हम गर्व करते हैं तो वह हमारा विरोध करते है। हमें कभी भी प्रभु की अवज्ञा नहीं करनी चाहिए, एक तरफ शत्रु हमें इन पापों को करने के लिए उत्तेचित करता है और दूसरी ओर प्रभु भी हमें त्याग देते है। तो हमारे जीवन को बचाने के लिए, केवल एक ही रास्ता है, अपने आप को विनम्र करो, अपने पापों को स्वीकार करो, प्रभु को पुकारो और प्रभु के सामने रोओ। हमें याद रखना चाहिए, हम सब उनकी रचना हैं, वह हमें कभी नष्ट नहीं करेंगे। लेकिन उस समय भी, अगर हम अपने पापों से दूर नहीं होते हैं, तो हम निश्चित रूप से शिकार के हाथों और शत्रु के चंगुल में पड़ जाएंगे और अंधकार में चले जाएंगे। इसलिए, इस स्थिति से बाहर निकलने का केवल एक ही तरीका है, खुद को विनम्र करने और क्षमा मांगने की आवश्यकता है। हमें प्रभु परमेश्वर के लिए किए गए वाचा को कभी नहीं भूलना चाहिए।

हम पवित्र शास्त्र में याकूब की कहानी जानते हैं, जब वह घर छोड़कर भाग गया था, उस रात वह उस समय रास्ते में प्रभु से मिला, उसने प्रभु के साथ एक वाचा बाँधी, आइए हम पढ़ें उत्पत्ति 28: 10–22 ''10 याकूब बेर्शेबा से निकलकर हारान की ओर चला। 11 और उसने किसी स्थान में पहुँचकर रात वहीं बिताने का विचार किया, क्योंकि सूर्य अस्त हो गया था; इसलिये उसने उस स्थान के पत्थरों में से एक पत्थर ले अपना तकिया बनाकर रखा, और उसी स्थान में सो गया। 12 तब उसने स्वप्न में क्या देखा, कि एक सीढ़ी पृथ्वी पर खड़ी है, और उसका सिरा स्वर्ग तक पहुँचा है; और परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं। 13 और यहोवा उसके ऊपर खड़ा होकर कहता है, "मैं यहोवा, तेरे दादा अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का भी परमेश्वर हूँ; जिस भूमि पर तू लेटा है, उसे मैं तुझ को और तेरे वंश को दूँगा। 14 और तेरा वंश भूमि की धूल के किनकों के समान बहुत होगा, और पश्चिम, पूरब, उत्तर, दक्षिण, चारों ओर फैलता जाएगा: और तेरे और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएँगे। 15 और सुन, मैं तेरे संग रहूँगा, और जहाँ कहीं तू जाए वहाँ तेरी रक्षा करूँगा, और तुझे इस देश में लौटा ले आऊँगा: मैं अपने कहे हुए को जब तक पूरा न कर लूँ तब तक तुझ को न छोडूँगा।" 16 तब याकूब जाग उठा, और कहने लगा, "निश्चय इस स्थान में यहोवा है; और मैं इस बात को न जानता था।" 17 और भय खाकर उसने कहा, "यह स्थान क्या ही भयानक है! यह तो परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता; वरन् यह स्वर्ग का फाटक ही होगा।" 18 भोर को याकूब उठा, और अपने तकिए का पत्थर लेकर उसका खम्भा खड़ा किया, और उसके सिरे पर तेल डाल दिया। 19 उसने उस स्थान का नाम बेतेल रखा; पर उस नगर का नाम पहले लूज था। 20 तब याकूब ने यह मन्नत मानी, ''यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे, और मुझे खाने के लिये रोटी, और पहिनने के लिये कपड़ा दे, 21 और मैं अपने पिता के घर में कुशल क्षेम से लौट आऊँ; तो यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरेगा। 22 और यह पत्थर, जिसका मैं ने खम्भा खड़ा किया है, परमेश्वर का भवन ठहरेगा: और जो कुछ तू मुझे दे उसका दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूँगा।'' हमारा प्रभु एक विश्वास योग्य प्रभु है, वह नहीं बदलता, उन्होंने याकूब से किया अपना वादा निभाया। उन्होंने उसे भोजन, पानी, पत्नियाँ, बच्चे, धन और समृद्धि प्रदान की और उसे प्रसिद्ध बनाया। लेकिन याकूब ने परमेश्वर से की गयी प्रतिज्ञा को भुला दिया। प्रभु परमेश्वर याकूब के लिए इंतजार कर रहे थे कि वह उनके प्रति किए गए प्रतिज्ञा को याद रखें, उसने केवल बेतेल में एक पत्थर रखा था ताकि उन्हें वहां एक मंदिर बनाया जा सके, जिसे याकूब पूरी तरह से भूल गया था। परमेश्वर अब याकूब को सबक सिखाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने उसे सबक सिखाने के लिए याकूब की बेटी दीना का इस्तेमाल किया। प्रभु ने दीना के हृदय में

इच्छा डाली की वह बाहर जाए और अपने दोस्तों से मिले। जब वह अपने दोस्तों से मिलने के लिए बाहर गई, तो उसे दुष्ट लोगों ने पकड़ लिया और उसका जीवन नष्ट हो गया। इससे भाइयों और दुश्मन का डेरे के बीच लड़ाई हुई, याकूब के जीवन में बहुत दुःख और दर्द था। उस समय परमेश्वर ने याकूब से बात की उत्पत्ति 35: 1–3 ''1 तब परमेश्वर ने याकूब से कहा, ''यहाँ से निकल कर बेतेल को जा, और वहीं रह; और वहाँ परमेश्वर के लिये वेदी बना, जिसने तुझे उस समय दर्शन दिया जब तू अपने भाई एसाव के डर से भागा जाता था।'' 2 तब याकूब ने अपने घराने से, और उन सबसे भी जो उसके संग थे कहा, ''तुम्हारे बीच में जो पराए देवता हैं, उन्हें निकाल फेंको; और अपने अपने को शुद्ध करो, और अपने वस्त्र बदल डालो; 3 और आओ, हम यहाँ से निकल कर बेतेल को जाएँ; वहाँ मैं परमेश्वर के लिये एक वेदी बनाऊँगा, जिसने संकट के दिन मेरी सुन ली, और जिस मार्ग से मैं चलता था, उसमें मेरे संग रहा।'' प्रभु ने सभी चीजों के साथ याकूब को आशीर्वाद दिया, लेकिन अंत में याकूब ने अन्यजातियों के साथ मिल गया और पापपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगा था। उत्पत्ति अध्याय 34 में, हम देखते हैं कि परमेश्वर ने याकूब को कैसे दंडित किया क्योंकि उसने परमेश्वर के लिए किए गए प्रतिज्ञा को पूरा नहीं किया। याकूब इस देश में रहने के लिए भयभीत और दुखी हो गया। तुरंत, याकूब ने बेतेल वापस जाने और प्रभु के लिए मंदिर का निर्माण करने का फैसला किया, जो कि उसने वर्षों पहले प्रतिज्ञा की थी। जब हम भी उस प्रतिज्ञा को पूरा करना भूल जाते हैं जो हमने प्रभु से किया है, तो वह निश्चित रूप से उसी की पूर्ति के लिए हमारी प्रतीक्षा करेंगे। लेकिन, अगर हम भूल जाते हैं, तो वह हमारे जीवन में दर्द और दुःख को लाकर हमें याद दिलाएंगे और प्रभु हमारे भीतर भय भी लाते है, इस प्रकार हमें उनके लिए किए गए प्रतिज्ञा को पूरा करने में मदद करते है। अंत में हम देखते हैं कि प्रभु ने याकूब के जीवन में जो भय डाला है, उसे फिर से पढ़ें उत्पत्ति 35: 1–3 ''1 तब परमेश्वर ने याकूब से कहा, ''यहाँ से निकल कर बेतेल को जा, और वहीं रह; और वहाँ परमेश्वर के लिये वेदी बना, जिसने तुझे उस समय दर्शन दिया जब तू अपने भाई एसाव के डर से भागा जाता था।'' 2 तब याकूब ने अपने घराने से, और उन सबसे भी जो उसके संग थे कहा, ''तुम्हारे बीच में जो पराए देवता हैं, उन्हें निकाल फेंको; और अपने अपने को शुद्ध करो, और अपने वस्त्र बदल डालो; 3 और आओ, हम यहाँ से निकल कर बेतेल को जाएँ; वहाँ मैं परमेश्वर के लिये एक वेदी बनाऊँगा, जिसने संकट के दिन मेरी सुन ली, और जिस मार्ग से मैं चलता था, उसमें मेरे संग रहा।'' यह हमारे लिए हमारे प्रभु का प्यार है, उनका रास्ता एक सरल रास्ता है। वह हमें कभी भी कुछ भी करने के लिए मजबूर नहीं करते है लेकिन उम्मीद करते है कि हम इसे अपनी मर्जी से करेंगे। सभोपदेशक 5: 5–6 कहता है, ''5 मन्नत मानकर पूरी न करने से मन्नत का न मानना ही अच्छा है। 6 कोई वचन कहकर अपने को पाप में न फँसाना, और न ईश्वर के दूत के सामने कहना कि यह भूल से हुआ; परमेश्वर क्यों तेरा बोल सुनकर अप्रसन्न हो, और तेरे हाथ के कार्यों को नष्ट करे?'' हर शब्द जो हम प्रभु से बोलते हैं, स्वर्गीयदूत उसे रिकॉर्ड करते है। इस प्रकार, हमें कभी भी कुछ ऐसा नहीं कहना चाहिए जो हम नहीं करना चाहते हैं या एक वादा करते हैं जिसे हम नहीं रख सकते हैं। इस प्रकार, जब हम प्रभु से बात करते हैं और कुछ वादा करते हैं, तो हमें हमेशा इसे पूरा करना चाहिए। हमें कभी भी प्रभु से ऐसा वचन नहीं देना चाहिए, जिसे हम कभी पूरा न कर सके, उससे बेहतर है की हम कोई प्रतिज्ञा करे ही नहीं।

जहाँ भी हम प्रार्थना करे चाहे हमारे घर में या मंदिर में, परमेश्वर के दूत हमारे द्वारा बोली गई बातों को रिकॉर्ड करते है। इस प्रकार हमें अपनी प्रार्थनाओं के अनुसार अपना जीवन जीना चाहिए, प्रभु के सामने खुद

को विनम्र रखना चाहिए। वह हमेशा विनम्र की सुनेंगे, लेकिन घमंडी का विरोध करते हैं। प्रभु ने हमें अपने द्वारा किए गए प्रतिज्ञा की याद कभी नहीं दिलानी चाहिए, हमें अपनी प्रतिज्ञा खुद से पूरी करनी चाहिए और जो वचन हमने प्रभु से किए हैं उसे भी निभाना चाहिए। शाऊल एक चरवाहा लड़का था, लेकिन परमेश्वर ने उसे इस्राएल पर एक राजा बना दिया। उसने लंबे समय तक इस्राएल में शासन किया, अंत में प्रभु ने उसे अमालेकियों, कनानियों से लड़ने और उन्हें पूरी तरह से नष्ट करने के लिए कहा। लेकिन शाऊल ने राजा और मोटे पशुओं को बख्श दिया और और जो कुछ अच्छा था, उन पर शाऊल ने कोमलता की और वापस लौट आया। लेकिन हम जानते हैं कि परमेश्वर ने शाऊल को कैसे दंड दिया। अमालेकी, कनानी लोग कैसे थे, परमेश्वर ने शाऊल को उन्हें नष्ट करने के लिए क्यों कहा। वे ऐसे लोग थे जो इस्राएलियों को बहुत परेशान करते थे और उनके जीवन में दुःख लाते थे। इस प्रकार, प्रभु ने शाऊल को क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बच्चा, क्या दूधपीता, क्या गाय–बैल, क्या भेड़–बकरी, क्या ऊँट, क्या गदहा, सभी जानवर और उनके धन–सम्पति को नष्ट करने की आज्ञा दी। किसी भी चीज पर दया न करें ऐसी आज्ञा दी। आइए हम पढ़ें 1 शमूएल 15: 3 ''इसलिये अब तू जाकर अमालेकियों को मार, और जो कुछ उनका है उसे बिना कोमलता किए नष्ट कर; क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बच्चा, क्या दूधपीता, क्या गाय–बैल, क्या भेड़–बकरी, क्या ऊँट, क्या गदहा, सब को मार डाल'।'' परमेश्वर ने शाऊल को अमालेकियों, कनानियों को नष्ट करने के लिए क्यों कहा? व्यवस्थाविवरण 25: 17–18 कहता है ''17 "स्मरण रख कि जब तू मिस्र से निकलकर आ रहा था तब अमालेक ने तुझ से मार्ग में क्या किया, 18 अर्थात् उनको परमेश्वर का भय न था; इस कारण उसने जब तू मार्ग में थका–माँदा था, तब तुझ पर चढ़ाई करके जितने निर्बल होने के कारण सबसे पीछे थे उन सभों को मारा।'' जब दुश्मन ने इस्राएलियों पर हमला किया, तो हम जानते हैं कि कैसे परमेश्वर ने शाऊल को अमालेकियों, कनानियों को नष्ट करने की आज्ञा दी थी। हमारे जीवन में कई बार प्रभु परमेश्वर भी हमें सही मार्ग दिखाने के लिए लोगों से कहने के लिए कहते हैं और कई बार उन्हें चेतावनी भी देते हैं। तो कई बार हमारी इच्छा के परे भी, हमें परमेश्वर की आज्ञा को निभाना पड़ता है। जब प्रभु कहते हैं कि किसी को खिलाओ, हमें उन्हें खिलाना चाहिए, हम प्रभु से सवाल नहीं कर सकते हैं। परमेश्वर जानते है कि वह हमें कुछ करने की आज्ञा क्यों देते है। जैसे परमेश्वर ने शाऊल को अमालेकियों, कनानियों को नष्ट करने की आज्ञा दी। तब शमूएल ने शाऊल को समझाया न्यायियों 6: 3–4 ''3 जब जब इस्राएली बीज बोते तब तब मिद्यानी और अमालेकी और पूर्वी लोग उनके विरुद्ध चढ़ाई करके 4 अज्जा तक छावनी डाल डालकर भूमि की उपज नष्ट कर डालते थे, और इस्राएलियों के लिये न तो कुछ भोजनवस्तु, और न भेड़–बकरी, और न गाय–बैल, और न गदहा छोड़ते थे।'' इस्राएलियों ने खेतों में काम किया और अमालेकियों ने आकर उसे नष्ट कर दिया, यह परमेश्वर लंबे समय तक देखते रहे। इस प्रकार, परमेश्वर ने शाऊल से कहा कि अमालेकियों से बदला लेना, आइए हम पढ़ें 1 शमूएल 15: 3 ''इसलिये अब तू जाकर अमालेकियों को मार, और जो कुछ उनका है उसे बिना कोमलता किए नष्ट कर; क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बच्चा, क्या दूधपीता, क्या गाय–बैल, क्या भेड़–बकरी, क्या ऊँट, क्या गदहा, सब को मार डाल'।'' याद रखें कि प्रभु की आज्ञा को सुनने और उसे पूरी तरह से पालन करने के लिए हमें हमेशा परिश्रमी होना चाहिए। साथ ही प्रत्येक प्रतिज्ञा हम प्रभु परमेश्वर से करते हैं, हमें अवश्य पूरा करना चाहिए। इस प्रकार, हमें हमेशा प्रभु का आशीर्वाद लेने के लिए विनम्र होना चाहिए।

तो आइए, हम परमेश्वर के वचन को निष्ठापूर्वक पढ़ें और समझें। अकेले वचन हमारे जीवन में अत्यधिक आशीष लाएगा। प्रभु इस संदेश को आशीष दे!

पास्टर सरोजा म।